**ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही।**
**एक कौल बीच बंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया।। ६ ।।**

रसूल साहब ने खुदा की गवाही भी दी और उनकी सौगन्ध खाकर भी कहा कि खुदा खुद आएगा। एक जगह उन्होंने खुदा को बन्दे के रूप में आना बताया है, अर्थात् जब तक श्री प्राणनाथजी जाहिर नहीं हुए, तब तक मेहराज ठाकुर कहलाए और बाद में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हो गए।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ४६८ ॥

## अमेतसालून

**महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज कयामत।**
**पढ़्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान।। १ ।।**

रसूल साहब ने कयामत आने की दावत जाहिर की और सबको उनके कर्मों के हिसाब से बयान होने का डर भी बताया। इस बात को उन्हीं लोगों को कुरान से पढ़ाया, परन्तु बेईमान लोग यह तीनों बातें न मुहम्मद को, न कयामत को और न कुरान को ही मानते हैं।

**काफर पूछें मोमिनों से ले, न पूछे रसूल को दिल दे।**
**खुदाए ताला ने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर।। २ ।।**

काफिर लोग रसूल साहब के पास दिल की चाहना से पूछने नहीं आते, बल्कि उनके सेवकों से दोष निकालने के लिए पूछा करते हैं कि कुरान में लिखा है कि तब खुदा ताला ने इस तरह से कहा कि इन काफिर लोगों को किस बात का संशय है?

**कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिनमें ल्यावें सक।**
**रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर।। ३ ।।**

खुदा ने कहा कि तुम्हें कुरान से इतना महत्वपूर्ण ज्ञान दिया है। फिर भी उस पर संशय लाते हो। काफिर रसूल साहब को झूठी कविता करने वाला कवि और झूठे चमत्कार करने वाला जादूगर कहते हैं।

**ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत।**
**कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर दिवाना कहे।। ४ ।।**

रसूल साहब शुरू से ही पैगम्बर हैं। कुरान में लिखे अनुसार रसूल साहब की बड़ी भारी महिमा है, किन्तु कुछ लोग तो पैगम्बर मानते हैं। कुछ लोग कवि (शायर) और कुछ दीवाना कहते हैं।

**कोई कोई कयामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें।**
**एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे कयामत।। ५ ।।**

कोई-कोई कयामत को मानते हैं और कोई सामने आकर ताना मारते हैं—बचो-बचो, कयामत आ रही है। एक जमात में रसूल साहब नबी कहलाते हैं। वह कहते हैं कि कयामत के समय रसूल साहब फिर आएंगे और हमको शैतान के पंजे से छुड़ाएंगे।

Nijanand App

**केतेक साहेबसों बैठे फिर, केतेक कयामत से मुनकर।**
**बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात।। ६ ।।**

कितने लोग तो ऐसे हैं जो खुदा को ही नहीं मानते। कितने ऐसे हैं जो कयामत का विश्वास नहीं करते। कई लोग ऐसे हैं जो दुनियां को अखण्ड समझे बैठे हैं और कई ऐसे हैं जो सब बातों में संशय रखते हैं।

**खुदाए की सौंह खाए के कही, के कयामत नजीक आई सही।**
**पेहेली नीयत अकीदे अपनी, झूठा कौल ना करे धनी।। ७ ।।**

रसूल साहब ने खुदा की सौगन्ध खाकर कहा कि कयामत निकट आ गई है। पहले अपनी नीयत साफ करके देखो कि खुदा झूठा वायदा कभी नहीं करते।

**जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान।**
**पहाड़ मेखां कही उस्तुवार, पैदा किया दुनियां नर नार।। ८ ।।**

खुदा ने अपने हुकम से जमीन को बिस्तर बनाया जिस पर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को उतारेंगे और जीवसृष्टि को पैदा करेंगे। जमीन के बिस्तर के ऊपर कीलों की तरह पहाड़ बनाए और ऐसी जमीन पर नर-नारी (जीवों) को पैदा किया।

**तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे।**
**कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे।। ९ ।।**

तुम्हारी औलाद में जो बचे रहेंगे, कर्मों के अनुसार उनमें से किसी के मुंह काले होंगे, कोई सफेद। इनमें कोई छोटे होंगे कोई बड़े होंगे। कोई अच्छे काम करेंगे, कोई बुरे काम करेंगे। कोई रात भर जागकर बन्दगी करेंगे।

**रात निकोइयों को भाने, कूवत हैवानी की आने।**
**बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर।। १० ।।**

संसार पशुवृत्ति का हो जाएगा और भलाई करने वालों को कष्ट देंगे। यह लोग खुदा की बन्दगी से दूर हो जाएंगे और माया के अंधेरे में फंसे रहेंगे।

**साहेब फतुआत का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे।**
**इनकी नजरों न छिपे दुस्मन, जो कोई हैं साहेब के तन।। ११ ।।**

न्याय करने वाले साहेब खुदा ने कुरान में लिखा है कि गफलत, अर्थात् माया के खेल के तुच्छ जीव जो त्रिगुण के पूजक हैं, वह मोमिनों के ईमान, इश्क, बन्दगी में खलल नहीं डाल सकते। यह मोमिन श्री राजजी महाराज के अंग हैं, इसलिए इनकी नजर से दुश्मन नहीं छिपेंगे।

**रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम, करें परदा दुनियां सों चलें आराम।**
**दिन के तांईं कह्या बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार।। १२ ।।**

रात में बन्दगी करने वाले, अर्थात् छिपकर बन्दगी करने वाले मोमिन हैं। यह दुनियां में दिखावा नहीं करते और अपने धनी को रिझाते हैं। दुनियां में सारे जीव बेईमानी पर चलने वाले हैं, इसलिए इनको दिन का बाजार कहा है, क्योंकि यह लोग लूट-पाट, मार-पीट, झगड़े-फसाद, निन्दा में मग्न रहते हैं।

Nijanand App

**ए जो चले रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊं बलिहार।**
**कह्या जो साहेब का दिन, ओ बखत तलब करें मोमिन।। १३ ।।**

जो रात को, अर्थात् छिपकर बन्दगी करने वाले हैं, मैं (महामति) ऐसे मोमिनों के चरणों पर बलिहारी जाती हूं। कयामत के वक्त साहेब के आने का जो दिन कहा है, उस समय की मोमिन चाहना करते हैं।

**इनहीं में ढूंढ़ें हासिल, इस दिन उमत की फसल।**
**इनके तले सातों आसमान, ए सारों के ऊपर जान।। १४ ।।**

इन मोमिनों को ही खुदा की पहचान है। इनके वास्ते ही ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आई। मृत्युलोक से बैकुण्ठ तक सातों आसमान के देवी-देवताओं के ऊपर इन मोमिनों की महिमा को समझो।

**और खलक जो इनके तले, तिन खलकों को होए जुलजुले।**
**पैदा किया आफताब रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमिन।। १५ ।।**

इन देवी-देवताओं के नीचे जो जीवसृष्टि है, उनको दैवी-प्रकोप के कष्ट भोगने पड़ेंगे। कुलजम सरूप की वाणी का सूर्य मोमिनों के वास्ते ही उदय हुआ है।

**इनों के साथ उतर्‌या बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल।**
**तिनकी पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास।। १६ ।।**

इन मोमिनों के साथ श्री श्यामाजी महारानी बादल बनकर आई हैं। जिनके तारतम वाणी के ज्ञान से सबको ज्ञान (बूंदें) मिला। इन तारतम रूपी पानी की बूंदों से ही तीनों प्रकार की सृष्टियों को आत्मा का आहार मिला।

**गेहूं जौ और कह्या घास, काफर फरिस्ते रूहें उमत खास।**
**फरिस्ते जो गेहूं इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम।। १७ ।।**

गेहूं, जौ और घास तीन सृष्टियों की पहचान है। काफिर घास, फरिश्ते जौ और मोमिनों को गेहूं कहा है।

**मोती दरियाव से काढ़्या महंमद, इन बिध इत लिख्या सब्द।**
**घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो उतरी दोऊ दरियाव से जान।। १८ ।।**

कुरान में ऐसा लिखा है कि भवसागर से इमाम मेंहेंदी ने मोती को बाहर निकाला। सारी दुनियां को जानवरों की तरह घास खाने वाला कहा है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की दो जमातें परमधाम और अक्षरधाम से उतरी हैं, ऐसा जानो।

**याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप लपेटे गए।**
**इनों के बीच चले हुकम, रोज कयामत को जाहेर खसम।। १९ ।।**

मोमिनों को परमधाम के बगीचे के वृक्ष की उपमा दी है और उनकी संगति करने से ईश्वरीसृष्टि ने भी शोभा पाई। कयामत का दिन जाहिर होने पर इनका हुकम सब मानेंगे।

**बरकरार किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही कयामत।**
**ए फसल परहेजगार मोमिन, काफरों के तंबीह के दिन।। २० ।।**

कयामत का समय श्री राजजी के हुकम से निश्चित है। उस समय मोमिनों को तथा ईश्वरीसृष्टि को कुलजम सरूप की वाणी का आनन्द मिलेगा और काफिर लोग अपने कर्मों का फल भोगेंगे।

Nijanand App

**इस रोज फूंके करनाए, असराफील सूर कुरान के गाए।**
**एक सूरें आखिर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन।। २१ ।।**

कयामत के दिन असराफील फरिश्ता कुलजम सरूप की वाणी की गर्जना करेगा। उसकी एक गर्जना से सबके झूठे अहंकार समाप्त हो जाएंगे और दूसरी गर्जना से महाप्रलय होकर सबको बहिश्तों में कायमी मिल जाएगी।

**सब उठे कबर थें अपनी, कायम किए कयामत के धनी।**
**इमाम सालबी यों कहे बनी, रसूल पूछे उमत अपनी।। २२ ।।**

कयामत के दिन कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल करके सारे संसार के जीवों को जगाएंगे और उनको श्री प्राणनाथजी महाराज अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करेंगे। इमाम सालवी अपने बेटे से कहते हैं कि कयामत के समय कायम करने से पहले रसूल साहब अपनी जमात का हिसाब लेंगे।

**कहे कयामत में सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए।**
**बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन।। २३ ।।**

इमाम सालवी अपने बेटे से कहता है कि कयामत के वक्त सबको सावचेत (सतर्क) किया जाएगा और सब संसार के लोगों के कामों का दस तरह से हिसाब लिया जाएगा। जिन्होंने वाणी को पहचाना, लेकिन यकीन नहीं लाए, उनकी बन्दर की शक्ल हो जाएगी।

**सुवर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल के ढिग ना गए।**
**गधे सूरत कहे हरामकार, जिन के बुरे फैल रोजगार।। २४ ।।**

जिन लोगों में कभी परिश्रम (मेहनत) की कमाई नहीं की और लूट, घसोट, चोरी, कपट की कमाई खाई है, वह सुअर बन जाएंगे। जो धन्धों में बुरे काम करेंगे उनको हरामी कहा है और उन्हें गधे की सूरत मिलेगी।

**सूद खाने वाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फंदे।**
**न किया सिजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहेरे पड़े दोजख मार।। २५ ।।**

जो हमेशा ब्याज का धन्धा करते हैं, वह अन्धे हो जाएंगे। जिन्होंने वाणी को नहीं सुना और खुदा पर सिजदा नहीं किया, वह कान से बहरे हो जाएंगे।

**गूंगे कहे जालिम हुकम, वे सबके तले न ले सकें दम।**
**पढ़े जुबां काटे पीव लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे।। २६ ।।**

जालिम अधिकारी (अफसर) गूंगे हो जाएंगे और सबके नीचे दबे होंगे जो सांस भी न ले पाएंगे। झूठी बातों को सत्य करके कहने वाले वकीलों की गवाही करने और ऐसे दूसरे लोगों की जुबान काट दी जाएगी और उस कटी जुबान से खून और पीव बहेगा।

**मलें दोजखी हाथ पांऊं दोए, ताए देखे भिस्ती अचरज होए।**
**उड़न वाले कहे मोमिन, मुतकी भी पड़ोसी तिन।। २७ ।।**

दोजख में जलने वाले लोग हाथ मल-मलकर पश्चाताप करेंगे और इनकी ऐसी हालत देखकर मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि को हैरानी होगी। मोमिनों को इश्क, ईमान के परों पर उड़ने वाला कहा है। ईश्वरीसृष्टि उनकी पड़ौसी है।

Nijanand App

**ताए हर भांत रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन।**
**चुगलखोर काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलों को लगे घाउ।। २८ ।।**

इन ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को जिसने कष्ट पहुंचाया है, वह सूली पर चढ़ाया जाएगा और नीचे से आग जलाई जाएगी। चुगलखोरों के हाथ-पांव काट दिए जाएंगे। जो कठोर दिल वाले हैं, उनकी छाती में भाले मारे जाएंगे।

**ए दस भांत की कही दोजक, जो बे फुरमान हुए हक।**
**जिनहू फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए।। २९ ।।**

जो खुदा के अवज्ञाकारी रहे, खुदा के फरमान को नहीं माना, उनको दस प्रकार की दोजख की अग्नि में जलना पड़ेगा। ऐसा इमाम सालवी ने अपने बेटे से कहा। फिर जिसने जैसे कर्म किए, उनको वैसा ही फल मिला।

**फुरमाया केतेक फेर उठाए, तकब्बरों दोजख हमेसगी पाए।**
**और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी उमत साहेब के दर।। ३० ।।**

उन्होंने ऐसा बताया है कि पश्चाताप करने के बाद उनको फिर निर्मल करके अखण्ड कर दिया जाएगा। जो अहंकार के नशे में चूर अभिमानी लोग हैं, वह दोजख की अग्नि में जलते ही रहेंगे। जब तक उनका अभिमान चूर-चूर नहीं होगा, यकीन नहीं लाएंगे। जिनको मोमिन कहा है, वह श्री राजजी महाराज के अंग हैं। उनको कुरान में मोती कहा है, वह परमधाम के रहने वाले हैं।

**उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदों मिले कहे।**
**जिनों इनों की दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई।। ३१ ।।**

मोमिनों का साथ जिन्होंने किया, उनको ईश्वरीसृष्टि कहा है। वह इनके साथ मिलकर चलेंगे। ऐसी ईश्वरीसृष्टि जिन्होंने मोमिनों की सच्ची दोस्ती की है, उनको राजजी महाराज ने अखण्ड बहिश्त दी।

**और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर।**
**ए जो दुनियां का कह्या आसमान, दो टुकड़े दिल कह्या जहान।। ३२ ।।**

और भी कुरान के दूसरे बयान को सुनो और अपने दिल से सत्य और झूठ को पहचानो। लिखा है कि आखिर के समय में दुनियां के आसमान के दो टुकड़े हो जाएंगे और इसी तरह दुनियां वालों के दिल भी टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, अर्थात् दिल के दो टुकड़े हो जाएंगे, अर्थात् दिलों में कुफ्र छा जाएगा।

**ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी कयामत बखत।**
**बीच हवा के पहाड़ उड़ाए, ए जो दुनियां में बुजरक केहेलाए।। ३३ ।।**

कयामत के समय खलबली मचेगी। वह समय बहुत ही कठिनाई का होगा। दुनियां के अन्दर बड़े-बड़े इलमी, ज्ञानी, धर्माचार्य जो अपने को बड़ा समझ रहे थे उनके पहाड़ों जैसे अहंकार हवा में उड़ जाएंगे।

**बुजरकों धोखा क्योंए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए।**
**फितुए इनों के जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब।। ३४ ।।**

ऐसे पढ़े-लिखे ज्ञानी धर्माचार्यों के संशय कभी नहीं मिटेंगे, इसलिए दुनियां को ऐसा कठिन समय दिखाया। ऐसी खलबली (संकट) का समय जब देखेंगे, तभी उनके अहंकार मिटेंगे।

Nijanand App

**ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए।**
**सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार।। ३५ ।।**

कुलजम सरूप की वाणी जाहिर होने से जब उनके अहंकार समाप्त हो जाएंगे, तब शान्त होकर वह इस हकीकत को आकर समझेंगे। उस समय सारी दुनियां के दिलों में कुफ्र छाया होगा तब वह सच्चे दिल से आकर कुलजम सरूप की वाणी को समझेंगे।

**अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक बखत।**
**जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े।। ३६ ।।**

अब जो ब्रह्मसृष्टि हो वह सुनो। दोजख की अग्नि में लोगों को जलता हुआ देखकर दूर मत हटना। अपने इश्क ईमान पर बराबर खड़े रहना और देखना गुनहगार किस तरह से आकर दोजख की अग्नि में जलते हैं।

**भिस्त रजवान मोमिन निगेहवान, दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान।**
**तहां तांईं बखत पोहोंचे सबन, पैदरपे जले अगिन।। ३७ ।।**

मोमिनों की मेहर भरी नजर से दोजख में जलने वाले पाक (साफ, निर्मल) होकर बहिश्तों में जाएंगे। अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेंगे। काफिर लोग तब तक दोजख की अग्नि में जलते रहेंगे, जब तक उनके अहंकार खत्म नहीं हो जाएंगे। उनको लगातार जलने वाली अग्नि से तभी छुटकारा मिलेगा और तभी वह बहिश्तों में जा सकेंगे।

**गुजरे हैं हद सें काफर, दूर दराज जानी थी आखिर।**
**दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखियों हाल इन।। ३८ ।।**

काफिर लोग समझते थे कि कयामत अभी बहुत दूर है और इसलिए वह डटकर कुफ्र कर रहे थे, इसलिए उनको बहुत लम्बे समय तक दोजख की आग में जलने का कष्ट सहन करना पड़ेगा।

**करे मोअलिम नकल अपनी जुबांए, सांची जिकर जो कही खुदाए।**
**जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल।। ३९ ।।**

खुदा ने जिस वाणी को सत्य कहा है, उसके पढ़े-लिखे लोग अपनी जबान से मनमाने अर्थ करते हैं। जब कुलजम सरूप की वाणी से कुरान और सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य खुल गये, तो हकीकत का पता लग जाएगा।

साखी– **दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे माहें।**
**सात हजार साल चालीस, नीके देखियो ताहें।। ४० ।।**

कुरान के पहले सिपारे में दुनियां की उम्र सात हजार चालीस वर्ष लिखी है, जिसे अच्छी तरह से देखना।

**तैंतालीस जुफ्त जो कहे, हर जुफ्त सत्तर बहार भए।**
**हर बहार सात सौ बरस लए, हर बरस तीन सौ साठ दिन दए।। ४१ ।।**

दुनियां की उम्र को पहले सिपारे में तैंतालीस जुफ्त करके लिखा है। एक जुफ्त में सत्तर बहार होते हैं और एक बहार में सात सौ वर्ष होते हैं और एक वर्ष में तीन सौ साठ दिन होते हैं।

Nijanand App

**याके एकैस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन।**
**ए रसूल के आए की मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल।। ४२ ।।**

इस तरह से इक्कीस लाख सात हजार दिन हुए। यह दिनों की गिनती आदम सफी अल्लाह, अर्थात् जबसे सृष्टि बनी है तबसे लिखी है। मोमिनों का एक साल एक दिन के समान निकल जाएगा। रसूल साहब के आने तक की गिनती का हिसाब है, करके देखो।

**पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे।**
**त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नब्बे कम किए।। ४३ ।।**

रसूल साहब के आने तक दुनियां की उम्र पांच हजार आठ सौ सैंतालीस वर्ष हुई। रसूल साहब की उम्र तिरसठ वर्ष जोड़ी, तो पांच हजार नौ सौ दस, अर्थात् छः हजार में नब्बे वर्ष कम हुए।

**इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर।**
**अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस।। ४४ ।।**

रसूल साहब पांच हजार नौ सौ दस वर्ष के बाद चले गए। अब उनके आगे की हकीकत बताती हूं। ग्यारहवीं सदी के जब बाकी दस साल रह गए तो दुनियां की उम्र पूरे सात हजार वर्ष हो गई, सम्वत् १७३५ आ गया।

**इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम।**
**जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे।। ४५ ।।**

अब सम्वत् १७३५ के बाद इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि का राज शुरू हुआ और रूह अल्लाह की चालीस वर्ष की बादशाही इनके तन से शुरू हो गई। यह सम्वत् १७७५ तक चली और तब जगह-जगह कुलजम सरूप की वाणी पहुंचाई गई। कुरान के अन्दर इन चालीस सालों को दो जोड़े करके कहा है, अर्थात् दो बीसों की बादशाही लिखी है। दुनियां की उम्र यहां तक कही है।

**तिनमें जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर।**
**तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखिर।। ४६ ।।**

इन चालीस के पहले दस वर्ष में कुलजम सरूप की वाणी फजर का ज्ञान मिला और वेद कतेब सभी के छिपे रहस्य खुल गए। ग्यारहवीं सदी के ऊपर जब तीस वर्ष बीते, अर्थात् सम्वत् १७७५ में दुनियां के धर्म ईमान सब समाप्त हो गए।

**सत्तर बरस पुलसरात के कहे, सो उठने कयामत बीच में रहे।**
**पुलसरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले आखिर।। ४७ ।।**

उसके बाद सत्तर वर्ष तक शरीयत के ज्ञान से पश्चाताप करने का समय था, जो कयामत के उठने के बीच में रहे। इन सत्तर वर्षों में, अर्थात् सम्वत् १७७५ से १८४५ तक लोगों को बड़ा पछताना पड़ा कि श्री प्राणनाथजी और मोमिन पास आए और हम लाभ न ले सके। पुलसरात शरीयत के चलने वाले काफिरों को इस खलबली में बड़ा दुःख हुआ।

Nijanand App

**दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए।**
**ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर।। ४८ ।।**

इस तरह से कुरान में दसवीं सदी का बयान दो बुर्जों का बयान किया है। वह बारहवीं सदी सम्वत् १८४५ में पूरी हो गई। उसके बाद देवी-देवताओं को, अजाजील को वाणी की पहचान होगी। तब सब दुनियां अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएगी।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५१६ ॥

**दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे।**
**क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक।। १ ।।**

इस तरह से कुरान के पहले सिपारे में जो कयामत की गिनती लिखी है, उसे मोमिनों ने अच्छी तरह समझा। दुनियां वाले जिन्हें दोजख की अग्नि में जलना है, वह इसको नहीं समझ सकते और न कभी उनके संशय ही मिट सकते हैं।

**पुरसिस का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे।**
**पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे।। २ ।।**

यह तो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कयामत के दिन का पता लगता है। वैसे कयामत कब होगी, इस बात को दुनियां वाले नहीं समझ पाते। कुरान के तीसवें आम सिपारे में श्री राजजी महाराज के पांच स्वरूपों का मिलना इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर इकट्ठा होना लिखा है। बृज, रास, अरब रसूल साहब, नौतनपुरी, श्री श्यामा महारानी और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज। इसको मोमिन ही समझ सकते हैं, जिनके दिल निर्मल हैं।

**ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें।**
**और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे।। ३ ।।**

जो इन पांचों के बताए, अर्थात् श्री प्राणनाथजी के बताए निजानन्द सम्प्रदाय की राह पर रहनी से ईमानदारी से चलेंगे, वही ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड धामों की रहने वाली हैं। दुनियां वाले झूठे काम और बदचलनी से जीवन व्यतीत करते हैं। वह दोजख (पश्चाताप) की अग्नि में जलेंगे।

**हमेसां दोजखी बदकार, रोज कयामत के हुए खुआर।**
**ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर।। ४ ।।**

सदा कुकर्म करने वाले जीवसृष्टि ही दोजखी हैं जो कयामत के दिन शर्मसार होंगे। कयामत के दिन को आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। अब श्री प्राणनाथजी महाराज कयामत की जानकारी दे रहे हैं। इनके स्वरूप को पहचानो।

**कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएं किए चेतन।**
**उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर।। ५ ।।**

परमधाम कब जाना होगा, किस रास्ते से जाना होगा, इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। कुरान हदीसों में लिखा है कि कयामत के दिन सबको अपने कर्मों का फल मिलेगा और तब श्री प्राणनाथजी महाराज अपने कर कमलों द्वारा सबको सीधे रास्ते पर चलाएंगे।

Nijanand App